गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 194
दि. 15.11.2025,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

एनडीए का महागठबंधन को 202 वोल्ट का झटका: बिहार की राजनीति में आया भूचाल, इतिहास ने बदला करवट

बिहार ने इस चुनाव में वही किया जिसकी कल्पना तक राजनीतिक पंडित नहीं कर पा रहे थे। 243 सीटों वाली विधानसभा में 200 से अधिक सीटों पर एनडीए की प्रचंड बढ़त सिर्फ एक चुनावी जीत नहीं, बल्कि एक ऐसा राजनीतिक भूचाल है जिसने जातीय समीकरण, पारंपरिक निष्ठाएं और राजनीतिक रणनीतियों की पुरानी इबारत पलट कर रख दी है। इस जीत ने नीतीश कुमार के लिए लगातार पांचवीं बार मुख्यमंत्री बनने का रास्ता बिल्कुल साफ कर दिया है, जबकि महागठबंधन अपने अस्तित्व की सबसे बड़ी परीक्षा से गुजरता दिख रहा है। बिहार की इस ऐतिहासिक जीत के पीछे महिलाओं के खातों में मिलने वाले 10 हजार रुपये वाली योजना निर्णायक टर्नअराउंड फ़ैक्टर साबित हुई। गांव की चौपालों से लेकर शहरी बस्तियों तक, महिलाओं की चुप्पी में छिपा भरोसा मतदान के दिन विस्फोट बनकर फूटा और नीतीश कुमार तथा भाजपा गठबंधन के पक्ष में बह गया। राजनीति के बड़े विश्लेषक अब इस सवाल का जवाब तलाश रहे हैं कि यह बदलाव शासन की स्वीकार्यता का परिणाम था या फिर प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ का असर—लेकिन इतना स्पष्ट है कि महिला वोटर इस चुनाव की निर्णायक नायक बनीं।

नतीजों का बड़ा परिदृश्य

पटना से आने वाले अंतिम रुझानों में एनडीए 202 सीटों पर बढ़त बनाए हुए है, जबकि महागठबंधन 30–35 सीटों पर संघर्ष करता दिख रहा है। वोट प्रतिशत के लिहाज से राजद सबसे बड़ी पार्टी जरूर रही—उसे 23% से अधिक वोट मिले—लेकिन यह शक्ति सीटों में तब्दील नहीं हो सकी। भाजपा 20% वोट के साथ दूसरे नंबर पर रही, मगर सीटों के लिहाज से वह सब पर भारी पड़ी। प्रशांत किशोर की जनसुराज पार्टी, जिसने 200 से ज्यादा सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे, इस चुनाव में पूरी तरह गुमनाम हो गई। इतने बड़े दावे, इतने लंबे मार्च—और नतीजा शून्य।

गठबंधन राजनीति का बुरा हाल

पांच साल पहले 110 सीटें जीतने वाला महागठबंधन इस बार 30 सीटों के आसपास सिमटता दिख रहा है। वोट चोरी, SIR, सी-सी-पैटर्न जैसे नारों और जुमलों के बीच उसकी मुद्दा आधारित रणनीति जनता को प्रभावित नहीं कर सकी। यह परिणाम सिर्फ राजनीतिक पराजय नहीं, बल्कि विपक्ष की दिशा और नेतृत्व दोनों पर गंभीर सवाल खड़ा करता है। महागठबंधन की धुरी रहे तेजस्वी यादव की आक्रामक कैंपेनिंग, भीड़ भरी रैलियां और तेज तर्रार भाषण—सब कुछ मिलकर भी राजनीतिक जमीन नहीं बचा सके। 2020 की 75 सीटों वाली ताकत घटकर लगभग 27 पर आ गई। तेजस्वी स्वयं भी रुझानों में काफी देर तक पीछे रहे। यह परिणाम उनकी नेतृत्व क्षमता और रणनीति पर बड़ा प्रश्नचिह्न है। कांग्रेस इस चुनाव की सबसे बड़ी हार है। पिछली बार 19 सीटों वाली पार्टी इस बार सिर्फ 4 सीटें जीत पाई। राहुल गांधी का बहुचर्चित 'हाइड्रोजन बम' भी बिहार की राजनीतिक ज़मीन पर फुस्स साबित हुआ। पीके का दावा था कि बिहार में 'नई राजनीति' की शुरुआत होगी, लेकिन नतीजों ने उनकी रणनीति पर ही सवाल खड़े कर दिए। 200 सीटों पर उम्मीदवार होने का दावा, लंबा जनसुराज अभियान, गांवों में महीनों की पैदल यात्रा—परंतु मत प्रतिशत तक चुनाव आयोग की वेबसाइट पर लंबे समय तक उपलब्ध नहीं। यह एक राजनीतिक प्रयोग था, लेकिन जनता ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। चिराग पासवान ने खुद को "प्रधानमंत्री का हनुमान" कहा था और इस चुनाव में वे सच में एनडीए के 'चमत्कारिक हथियार' साबित हुए। पिछले चुनाव की एक सीट से छलांग लगाकर इस बार 19 सीटें जीतते दिख रहे हैं। ओवैसी की AIMIM ने भी 5 सीटों के साथ अपनी पकड़ बनाए रखी है, जो बिहार की राजनीति में एक नए अध्याय का संकेत है। मोकामा में बाहुबली परिवारों की भिड़ंत से लेकर दरभंगा के अलीनगर में युवती मैथिली ठाकुर की बढ़त—यह चुनाव साफ दर्शाता है कि जनता ने चेहरे नहीं, अपना हित देखा। तेज प्रताप यादव महुआ से हार के करीब हैं, जबकि अनंत सिंह अपनी परंपरागत ताकत के साथ जीत रहे हैं।

भाजपा–जदयू की ऐतिहासिक छलांग

- दोनों दल 101–101 सीटों पर मैदान में उतरे थे।
- भाजपा पिछली बार की 74 सीटों से उछलकर लगभग 95 सीटों पर पहुंचती दिख रही है—20+ सीटों का रिकॉर्ड फ़ायदा।
- जदयू 43 से 85 सीटों तक पहुंच गई—यानि दोगुने से भी अधिक।
- इस प्रदर्शन ने यह साबित कर दिया कि गठबंधन की जमीन मज़बूत थी, लेकिन महिला वोट और कल्याणकारी योजनाओं ने इसे 'लैंडस्लाइड' में बदल दिया।

राजधानी में टिके थे 23 विदेशी, डिटेंशन सेंटर भेजा गया

दिल्ली की सीमाओं के भीतर अवैध रूप से टिके विदेशी नागरिकों के खिलाफ पुलिस ने ऐसी कड़ी कार्रवाई की है जिसने राजधानी में मौजूद गैर-वैध प्रवासियों पर एक बार फिर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। द्वारका जिले की सड़कों पर चलाए जा रहे सतर्कता और विशेष निरीक्षण अभियान के दौरान पुलिस को पता चला कि कई लोग महीनों—और कुछ मामलों में सालों—से बिना किसी वैध वीजा और कानूनी दस्तावेज के दिल्ली में रह रहे थे। यह खुलासा होते ही पुलिस ने इन सभी को घेराबंदी कर अलग-अलग इलाकों से गिरफ्तार किया और सीधे डिटेंशन सेंटर भेज दिया, जहां से आवश्यक औपचारिकताएँ पूरी होने के बाद उन्हें उनके मूल देशों में वापस भेजा जाएगा।

जिले के डीसीपी अंकित सिंह के अनुसार, यह कार्रवाई रात-दिन चलने वाली सूक्ष्म निगरानी का परिणाम थी। पुलिस टीमों ने बिंदापुर, डाबड़ी और मोहन गार्डन जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में जब दस्तावेज़ों की जांच शुरू की, तो 23 विदेशी नागरिक ऐसे मिले जिनके पास न तो वीज़ा था, न रेजिडेंस परमिट और न ही भारत में रहने का कोई वैध कानूनी आधार। सबसे अधिक 20 लोग बिंदापुर से पकड़े गए—यह वही इलाका है जहाँ किराये के घरों और सर्विस्ड अपार्टमेंट्स में कई विदेशी वर्षों से कम प्रोफ़ाइल में रहते आए हैं। डाबड़ी से दो और मोहन गार्डन से एक नागरिक हिरासत में लिया गया।

जब इन सभी को एफआरआरओ के समक्ष पेश किया गया तो यह स्पष्ट हो गया कि यह केवल दस्तावेज़ों की कमी का मसला नहीं बल्कि लापरवाही और नियमों की खुली अवहेलना का मामला है। इन विदेशी नागरिकों में 15 नाइजीरिया के, 4 सेनेगल के, 2 आइवरी कोस्ट के, 1 तंज़ानिया और 1 लाइबेरिया का नागरिक शामिल है। इनमें से कई लोगों ने पूछताछ में बताया कि वे लंबे समय से यहां रह रहे थे और कुछ ने तो महीनों से अवैध रूप से नौकरी तक कर रखी थी। पुलिस का कहना है कि ऐसे अवैध प्रवासी न सिर्फ कानून का उल्लंघन करते हैं बल्कि स्थानीय संसाधनों, स्वास्थ्य सुविधाओं और किराये के ढांचे पर अतिरिक्त भार डालते हैं, साथ ही सुरक्षा जोखिम भी पैदा करते हैं क्योंकि उनकी गतिविधियों का कोई रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं होता।

द्वारका जिला पुलिस की यह कड़ी कार्रवाई राजधानी में एक बड़े सफाई अभियान की शुरुआत मानी जा रही है। अधिकारियों ने संकेत दिया है कि जिस तरह यह कार्रवाई निर्णायक ढंग से की गई, उसी कठोरता के साथ यह अभियान आगे भी चलेगा। अगले कुछ हफ्तों में और भी इलाकों में दस्तावेज़ों की जांच होगी और जो भी विदेशी नागरिक वैधता से बाहर पाए जाएंगे, उन्हें इसी तरह डिटेंशन सेंटर भेजा जाएगा।

दिल्ली जैसे महानगर में जहां हर दिन हजारों लोग आते-जाते हैं, वहां अवैध प्रवासियों का मुद्दा हमेशा से संवेदनशील रहा है। इस ताज़ा कार्रवाई ने एक बार फिर साफ कर दिया है कि राजधानी की कानून व्यवस्था में किसी भी तरह की ढिलाई की अब कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी जाएगी। पुलिस का यह कदम न सिर्फ प्रशासनिक सख्ती का नमूना है बल्कि उन तमाम विदेशी नागरिकों के लिए भी संदेश है जो बिना अनुमति भारत में रहने की कोशिश करते हैं—कानून अपना काम करेगा और नियमों का उल्लंघन करने पर कोई रियायत नहीं मिलेगी।

बड़ी कार्रवाई: आतंकी उमर का मकान विस्फोटक से उड़ाया

दिल्ली में हुए भीषण कार धमाके ने पूरे देश की सुरक्षा व्यवस्था को झकझोर दिया था। घटना के कुछ ही दिनों बाद सुरक्षा एजेंसियों ने ऐसी निर्णायक कार्रवाई की जिसने घाटी से लेकर दिल्ली तक हर तरफ नई बहस छेड़ दी। पुलवामा जिले की सुनसान रात में अकस्मात गूंजते धमाके की आवाज़ ने पूरे इलाके को हिला दिया—यह वही धमाका था जिसमें आतंकी माने जा चुके डॉ. उमर उन नबी का मकान ध्वस्त कर दिया गया। यह कार्रवाई किसी सामान्य सरकारी अभियान की तरह नहीं बल्कि एक ऐसे आतंकी नेटवर्क को जड़ से उखाड़ने की निशानी थी, जो दिल्ली तक खतरनाक मंसूबों का जाल बुनने में जुटा था।

दिल्ली के लालकिले के पास हुए धमाके में 13 लोगों की जान चली गई थी और कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए थे। जांच एजेंसियों ने जब घटनास्थल से डीएनए के नमूने जुटाए, तो एक-एक कदम जोड़ते हुए वे पुलवामा तक पहुंचे। नमूनों का परीक्षण जब उमर की मां के डीएनए से कराया गया, तो सारी कड़ियाँ एक ही दिशा में जाकर टिक गईं—धमाका करने वाला व्यक्ति वही था जो कभी काबिल डॉक्टर माना जाता था, और अब एक कट्टरपंथी आतंकी बन चुका था।

उमर की पहचान केवल डीएनए तक सीमित नहीं रही। सुरक्षा एजेंसियों ने हाल ही में एक अहम सीसीटीवी फुटेज बरामद की, जिसमें उमर 10 नवंबर की सुबह मेवात टोल से गुजरता दिखाई दिया। उसके चेहरे पर मास्क जरूर था, लेकिन उसकी चाल, उसके हावभाव, और कार के भीतर रखे बड़े बैग ने सब कुछ समझा दिया कि वह उसी खतरनाक मिशन पर था, जिसकी गूंज कुछ ही घंटों बाद दिल्ली में सुनाई दी। यह वही आई-20 कार थी जिसे बाद में विस्फोटकों से भरकर लालकिले के निकट उड़ा दिया गया।

मेवात टोल पर उसका चेहरा एक पल के लिए कैमरे की ओर मुड़ा—जैसे वह जानता हो कि निगरानी मौजूद है, लेकिन उसकी परवाह न करता हो। कार की पिछली सीट पर रखा बड़ा बैग, जिसकी सामग्री अब जांच का केंद्र बनी हुई है, उसकी योजना की गहराई दर्शाता है। बदरपुर बॉर्डर से होते हुए दिल्ली में प्रवेश करने की उसकी हर हरकत कैमरे की नज़रों में थी, जैसे वह खुद अपने कदमों का सबूत छोड़ता चल रहा हो।

सुरक्षा एजेंसियों को शक है कि उमर अकेला नहीं था। पिछले वर्षों में वह कई उग्रवादी संगठनों से जुड़ा था और उसकी आदतें, आर्थिक स्रोत, संपर्क और फोन लोकेशन सब इस ओर इशारा करते हैं कि उसने अपने मिशन में कई छुपे हुए सहयोगियों की मदद ली होगी। एजेंसियां अब उसी नेटवर्क को खंगालने में जुटी हैं, जिसने एक डॉक्टर से आतंकी बने इस व्यक्ति को दिल्ली तक पहुंचाया।

बीएसएफः 24 घंटे में तीन पाकिस्तानी ड्रोन मार गिराए, पंजाब बॉर्डर पर हेरोइन की खेप जब्त

भारत–पाकिस्तान सीमा पर ड्रोन के ज़रिए नशीले पदार्थों की तस्करी का सिलसिला जिस तेजी से बढ़ रहा है, उसी गति से सीमा सुरक्षा बल भी अपनी जवाबी कार्रवाई को धारदार बनाता जा रहा है। पिछले 24 घंटों में बीएसएफ ने जो कदम उठाए, वे न सिर्फ तस्करों के मंसूबों पर भारी पड़े, बल्कि पंजाब बॉर्डर को सुरक्षित रखने की उनकी सतत तत्परता का मजबूत प्रमाण भी बन गए। तीन अलग-अलग जिलों में तीन पाकिस्तानी ड्रोन को मार गिराना और उनके पीछे छिपे भेज को बरामद करना इस बात का संकेत है कि सीमा पर तकनीक से लैस अपराधियों से निपटने के लिए जवान कितनी तैयार हैं।

अमृतसर के महावा गांव के ऊपर आसमान में मंडराता पहला ड्रोन रात के सन्नाटे में अचानक ध्यान खींचने लगा। ड्रोन की लो-फ्लाइट और दिशा ने जवानों को तुरंत सतर्क कर दिया। त्वरित प्रतिक्रिया टीम ने क्षणभर की भी देरी किए बिना ड्रोन की लोकेशन को ट्रैक किया और सटीक निशाना साधते हुए उसे नीचे गिरा दिया। यह घटना कुछ ही मिनटों में एक ऑपरेशन के रूप में पूरी हो गई, और तलाशी में पता चला कि यह डीजीआई मैविक 3 क्लासिक मॉडल का पूरा सेटअप था, जो पाकिस्तानी तस्करों की ओर से भारतीय इलाके में भेजा गया था।

इसी बीच फिरोजपुर में हबीबवाला क्षेत्र भी किसी खतरे से अछूता नहीं रहा। सीमा के दूसरे छोर पर जवान बीती घटना के बाद और अधिक चौकस थे कि तभी इलाके में संदिग्ध हलचल दिखी। देखते ही देखते एक और ड्रोन सीमा पार से भारतीय भूभाग को पार करने की कोशिश में दिखाई दिया। इस बार भी त्वरित प्रतिक्रिया ने ड्रोन को लंबा उड़ान नहीं भरने दी। उसे मार गिराने के बाद जब आसपास तलाशी ली गई, तो जमीन के एक कोने में प्लास्टिक में सील किया हुआ एक पैकेट मिला। वजन में हल्का लेकिन कीमत और खतरे में भारी—यह 558 ग्राम हेरोइन थी, जिसकी तस्करी फिर से ड्रोन के माध्यम से की जा रही थी। रात होते-होते तीसरी आवाज तरनतारन के मेहदीपुर गांव से उठी। सामान्यतः शांत रहने वाली सीमा की इस पट्टी में अचानक हवा को चीरती ड्रोन की भनभनाहट गूंजी। जवानों ने आवाज की दिशा और ड्रोन की ऊंचाई का अंदाजा लगाया। किसी बड़े खतरे को जन्म देने से पहले ही ड्रोन को निष्क्रिय कर दिया गया। इस पूरे ऑपरेशन ने यह साफ कर दिया कि पंजाब सेक्टर में तीन जिलों के अलग-अलग मोर्चों पर बीएसएफ की सतर्कता, तकनीकी क्षमता और ज़मीनी दक्षता एक-दूसरे के साथ कितनी गहराई से तालमेल बनाए हुए है।

दिल्ली आतंकी हमले का समर्थन करने पर असम में 20 गिरफ्तार — सोशल मीडिया पर बढ़ती चरमपंथी सक्रियता के खिलाफ बड़ी कार्रवाई

दिल्ली में हुए भीषण आतंकी हमले के बाद जहां देशभर में सुरक्षा एजेंसियां चौकन्नी हैं, वहीं असम पुलिस ने सोशल मीडिया पर फैल रही संदिग्ध गतिविधियों पर सबसे कड़ी कार्रवाई करते हुए पूरे राज्य में व्यापक अभियान चलाया। कई जिलों में देर रात से सुबह तक चली इस मुहिम में पुलिस ने 20 लोगों को गिरफ्तार किया, जिन पर आरोप है कि उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर दिल्ली हमले की सराहना की, हमलावरों की तरफदारी में पोस्ट साझा किए और आतंकवादी गतिविधियों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन देने वाली टिप्पणियाँ कीं।

मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने खुद सोशल मीडिया पर इस अभियान की पुष्टि की और साफ संदेश दिया कि असम की सरकार ऐसी किसी भी विचारधारा को पनपने नहीं देगी जो आतंकवाद को उचित ठहराती हो। उन्होंने कहा कि आतंकी घटनाओं का समर्थन करने वाले किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा और राज्य पुलिस ऐसे सभी तत्वों की ऑनलाइन गतिविधियों पर सख्त निगरानी रखेगी।

पूरे अभियान के दौरान गिरफ्तार किए गए लोगों में अधिकांश वे हैं जिन्होंने फेसबुक, इंस्टाग्राम और एक्स जैसे प्लेटफॉर्मों पर हमले के प्रति सहानुभूति जताई, खतरनाक टिप्पणियां पोस्ट कीं या ऐसे संदेश साझा किए जिनसे समाज में कट्टरपंथी सोच बढ़ सकती है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि आतंकवाद की डिजिटल लॉबी को रोकने के लिए सोशल मीडिया की मॉनिटरिंग अब पहले से कहीं अधिक आक्रामक ढंग से की जा रही है। गिरफ्तार लोगों की सूची भी व्यापक है, जो राज्य के कई जिलों में फैले नेटवर्क की ओर इशारा करती है—दरंग के मत्तिउर रहमान, ग्वालपाड़ा के हसन अली मोंडल, नलबाड़ी के जयंत मोहन दास, चिरांग के अब्दुल लतीफ और करी नूर हसन, कामरूप के वाजहुल कमाल, तसलीम अहमद और मनोवर हुसैन, बंगाईगांव के नूर अमीन अहमद, रफीजुल अली और अबू हनीफ, हैलाकांदी के फोरिद उद्दीन लस्कर, लखीमपुर के इनामुल इस्लाम और फिरुज अहमद, बरपेटा के साहिल शोमन सिकदार और रोकिबुल सुल्तान, होजाई के नसीम अकबर, दक्षिण सलमारा के अब्दुर रोहीम मोल्ला और कोकराझाड़ व बजाली जिलों के इनामुल हक और नवि हुसैन शामिल हैं।

पुलिस अब सभी आरोपितों के मोबाइल फोन, लैपटॉप और सोशल मीडिया अकाउंट्स से प्राप्त डिजिटल रिकॉर्ड का विश्लेषण कर रही है। यह जांच यह पता लगाने की कोशिश भी कर रही है कि कहीं इन लोगों का किसी बड़े नेटवर्क, व्हाट्सऐप ग्रुप या विदेशी कट्टरपंथी संगठनों से संपर्क तो नहीं था। अधिकारियों के अनुसार, डिजिटल फॉरेंसिक की रिपोर्ट आने के बाद आगे की कानूनी कार्रवाई तेज होगी, और यदि किसी के तार किसी आतंकी संगठन या फंडिंग चैनल से जुड़े पाए गए, तो उन पर कड़े कानूनों के तहत मुकदमा चलाया जाएगा। असम में यह कार्रवाई सिर्फ गिरफ्तारी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संदेश भी देती है कि आतंकी विचारधारा का समर्थन अब सिर्फ नैतिक अपराध नहीं माना जाएगा—यह राज्य की सुरक्षा के लिए सीधी चुनौती है, और इसका हर रूप में मुकाबला किया जाएगा।

दिल्ली–मुंबई एक्सप्रेसवे पर मौत की रफ्तार: एक झटके में पांच ज़िंदगियाँ ख़ामोश

रतलाम की ठंडी सुबह अभी पूरी तरह जगी भी नहीं थी कि दिल्ली–मुंबई एक्सप्रेसवे पर एक ऐसी चीख उठी, जो कुछ ही सेकंड में पाँच परिवारों को हमेशा के लिए तोड़ गई। भीमपुरा गाँव के पास माही नदी पर बना विशाल पुल रोज़ की तरह शांत खड़ा था, लेकिन शुक्रवार का सूरज उगने से पहले ही उस पुल ने एक ऐसी दुर्घटना देखी जिसकी गूंज कई घंटों तक पूरे इलाके में महसूस की गई। सुबह लगभग पाँच बजे तेज़ रफ्तार से दौड़ती कार अचानक बेकाबू हुई, लोहे की रेलिंग को ऐसे तोड़ा मानो कागज़ का बना हो, और अगले ही पल गहरी खाई में जा समाई। नीचे गिरते ही जो आवाज़ गूंजी, उसने आस–पास के खेतों में काम कर रहे किसानों को भी दहला दिया।

कार की दशा इतनी भयावह थी कि यह समझ पाना मुश्किल था कि वह कभी सड़क पर दौड़ी भी होगी। पुलिस और हाईवे पेट्रोलिंग टीम कुछ ही मिनटों में मौके पर पहुंच गई, लेकिन जो सामने था, उसने उन्हें भी कुछ पल के लिए स्तब्ध कर दिया। वाहन में सवार सभी पाँच लोगों की वहीं मौत हो चुकी थी। कोई भी सांसें नहीं ले रहा था। कोई हलचल नहीं थी—बस एक दर्दनाक सन्नाटा।

घटना में जिन लोगों की जान गई, उनमें 15 साल का दानिश भी शामिल था, जिसने अभी तक जीवन को जीना शुरू ही किया था। उसके साथ वडोदरा के रहने वाले 35 वर्षीय दुर्गेश प्रसाद भी कार में थे। मुंबई के गुलाम रसूल, उनके बेटे खलील और गुलाम पुत्र मोइनुद्दीन—ये चारों एक ही परिवार के थे। सब मिलकर दिल्ली से मुंबई लौट रहे थे, लेकिन शायद उन्हें भी अंदाज़ा नहीं था कि एक्सप्रेसवे की रफ्तार उन्हें उनकी मंज़िल तक पहुंचने से पहले ही लील लेगी।

हादसा कैसे हुआ—इसका जवाब पास लगे सीसीटीवी कैमरों में कैद था। फुटेज ने साफ़ दिखाया कि कार एक खतरनाक स्पीड पर चल रही थी। हाईवे पर लगे स्पीड गन के डेटा ने इसकी पुष्टि की। एनएचएआई के डायरेक्टर संदीप पाटीदार ने बताया कि दुर्घटना से कुछ सेकंड पहले वाहन 150 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ रहा था। शायद एक पलों का असंतुलन, शायद सड़क पर हल्की सी करवट—और ज़िंदगी पलट गई।

पुलिस ने क्षतिग्रस्त वाहन के टुकड़ों को हटाया, शवों को निकालकर एमजीएम मेडिकल कॉलेज में पोस्टमार्टम के लिए भेजा। भीमपुरा गांव के लोग बड़ी संख्या में इकट्ठा हो गए। कई लोगों ने कहा कि एक्सप्रेसवे पर आए दिन रफ्तार मौत बनकर लौटती है। परिवारों को सूचना भेज दी गई है। जो घर कुछ घंटों पहले तक सामान्य थे, वहां अब मातम पसरा है। एक माँ बेटे का इंतज़ार कर रही होगी, एक पिता अपने परिवार की सलामती की दुआ कर रहा होगा, और अब उन्हें केवल खबर मिलेगी—वह भी सबसे भयावह।

तेज़ रफ्तार ने एक बार फिर साबित कर दिया कि सड़कें कितनी भी चौड़ी हों, तकनीक कितनी भी आधुनिक हो, लेकिन एक क्षण की लापरवाही ज़िंदगी की सबसे बड़ी कीमत बन जाती है। रतलाम का यह हादसा उन तमाम ड्राइवरों के लिए एक चेतावनी बनकर उभरा है, जो एक्सप्रेसवे को अपनी रफ्तार की ताकत साबित करने का ज़रिया समझ लेते हैं। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है, लेकिन पांच ज़िंदगियाँ जो चली गईं, वे कभी लौटकर नहीं आएँगी।

गरवी गुजरात
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2002

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
गरवी गुजरात हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

महंगाई में कमी

सरकारी आंकड़े हमेशा सार्वजनिक विमर्श में रहते हैं। राहत और तरक्की के दावे विभिन्न सरकारों के दौर में अकसर सामने आते हैं। टकसाली सत्य यही है कि राहत व तरक्की का जमीनी प्रभाव भी नजर आना चाहिए। मसलन, जिस जनहित की बात की जा रही है, उसका अहसास भी आमजन को होना चाहिए। प्रथम दृष्टया यह राहतकारी माना जाना चाहिए कि देश में खुदरा महंगाई की दर में गिरावट दर्ज की गई है। बताया जा रहा है कि अक्तूबर में देश की मुद्रास्फीति की दर घटकर 0.25 रह गई है। यह स्थिति साल 2013 के बाद से सबसे कम बताई जा रही है। जाहिर है सरकार ने इसे अपनी बड़ी उपलब्धि माना है। सरकार का दावा है कि मुद्रास्फीति में यह बड़ी गिरावट कीमतों पर मजबूत नियंत्रण और कुशल वित्तीय प्रबंधन को ही दर्शाती है। लेकिन वहीं दूसरी ओर आम परिवारों के लिये इस राहत का अहसास करना इतना भी आसान नहीं है। दरअसल, मुद्रास्फीति में इस गिरावट में मुख्य रूप से खाद्य पदार्थों की कम कीमतों की भूमिका देखी जा रही है। वहीं दूसरी ओर हाल ही में की गई जीएसटी दरों में कटौती का प्रभाव भी बताया जा रहा है। जिसके चलते उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतों में गिरावट आई है। वहीं दूसरी ओर मुद्रास्फीति में यह तीव्र गिरावट पिछले साल की ऊंची कीमतों के आधार प्रभाव को भी दर्शाती है, जो शायद लंबे समय तक न रहे। प्रथम दृष्टया भले ही यह प्रभावशाली लगे, लेकिन कई लोग अभी भी उच्च घरेलू खर्चों का दबाव महसूस कर रहे हैं। दूध, दालों और सब्जियों जैसी रोजमर्रा की वस्तुओं की कीमतों में अभी भी उतार-चढ़ाव देखा जा रहा है। जिससे लोगों का पारिवारिक बजट प्रभावित हो रहा है। इसलिए, जहां समग्र मुद्रास्फीति दर में गिरावट आई है, वहीं आम लोगों के लिये व्यावहारिक जीवन यापन की लागत में उसी तरह की गिरावट महसूस नहीं की जा रही है। वैसे देखा जाए तो भारतीय रिजर्व बैंक यानी आरबीआई के लिये यह स्थिति राहत और चुनौती दोनों ही लेकर आ रही है।

दरअसल, ध्यान देने योग्य बात यह है कि मुख्य मुद्रास्फीति, जिसमें खाद्य और ईंधन शामिल नहीं हैं, ऊंची बनी हुई है। जो यह भी दर्शाती है कि मूल्य दबाव पूरी तरह से कम नहीं हुआ है। ऐसे में फुटकर मुद्रास्फीति इतनी कम होने के कारण उद्योग जगत की तरफ से दलील दी जा सकती है कि भारतीय रिजर्व बैंक दिसंबर की अपनी बैठक में उधार लेने और खर्च को प्रोत्साहित करने के लिये बैंक ब्याज दरों में कटौती पर विचार करे। लेकिन केंद्रीय बैंक को इस दिशा में सावधान भी रहना होगा। यदि केंद्रीय बैंक इस दिशा में कोई कदम उठाता है तो मुद्रास्फीति फिर से बढ़ भी सकती है। खासकर, अगर वैश्विक तेल की कीमतों में कोई अप्रत्याशित उछाल आ जाता है। वहीं दूसरी ओर यदि वैश्विक अनिश्चितता के माहौल में रुपया कुछ कमजोर होता है। वैसे देखा जाए तो इस दौरान, मुद्रास्फीति में गिरावट का बेहतर ढंग से उपयोग मांग बढ़ाने, आय बढ़ाने और खाद्य कीमतों को स्थिर बनाने में भी किया जा सकता है। इसमें दो राय नहीं कि किसी भी देश में मुद्रास्फीति की कम दर एक छोटी अवधि में विकास को पुनर्जीवित करने में मदद भी कर सकती है। लेकिन इसकी शर्त यही है कि लापरवाही से सरकारी खर्च न बढ़ाया जाए या कोई खराब योजना का क्रियान्वयन न हो। ऐसे में आंकड़े तो दिखा सकते हैं कि कीमतें नियंत्रण में हैं, लेकिन लोगों के अनुभव कुछ और ही कहानी बयां कर सकते हैं। देश में सच्ची प्रगति तभी मानी जा सकती है, जब राहत हर घर तक पहुंचेगी। लेकिन जरूरत इस बात की है कि राहत सिर्फ सरकारी आकंड़ों में ही नजर न आए। यह भी हकीकत है कि कीमतों का संतुलन मांग व आपूर्ति के संतुलन पर निर्भर करता है। जिसकी ओर भी सत्ताधीशों को ध्यान देने की जरूरत होती है। निस्संदेह, ऐसे में खुदरा महंगाई में गिरावट सुखद ही है, लेकिन जरूरत इस बात की भी कि यह राहत आम आदमी को भी महसूस होनी चाहिए।

निठारी कांड के निर्णय पर गूंजते सवाल

> “न्यायालय ने इन्हें दोष मुक्त तो करार दे दिया, किंतु ये न्याय एक तरफा है। अधूरा है। निठारी कांड तो हुआ है। चर्चित निठारी कांड में निचली अदालत से कोली को एक दर्जन से अधिक मामलों में फांसी की सजा सुनाई जा चुकी है।

निठारी हत्याकांड के दोषी ठहराए गए सुरेंद्र कोली को सुप्रीम कोर्ट ने बरी कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यह बेहद दुख की बात है कि लंबी जांच के बावजूद निठारी के जघन्य हत्याकांड के असली अपराधी की पहचान कानूनी मानकों के अनुरूप स्थापित नहीं हो पाई। अपराध जघन्य थे और परिवारों की पीड़ा अथाह थी। सुप्रीम कोर्ट ने नोएडा के निठारी हत्याकांड से जुड़े अंतिम लंबित मामले में सुरेंद्र कोली को बरी करते हुए यह टिप्पणी की। मुख्य न्यायाधीश जस्टिस बीआर गवई, जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस विक्रम नाथ की पीठ ने फैसले में कहा, आपराधिक कानून अनुमान या पूर्वधारणा के आधार पर दोषसिद्धि की अनुमति नहीं देता। खुदाई शुरू होने से पहले घटनास्थल को सुरक्षित नहीं किया गया था, खुलासे को उसी समय दर्ज नहीं किया गया। रिमांड दस्तावेज में विरोधाभासी विवरण थे और कोली को समय पर अदालत की ओर से निर्देशित चिकित्सा जांच के बिना लंबे समय तक हिरासत में रखा गया। अदालत ने कोली की सजा को रद्द करते हुए कहा कि अगर वह किसी और मामले में वांछित नहीं हैं, तो उन्हें तुरंत रिहा किया जाए। यह फैसला उन परिवारों और कानूनी हलकों के लिए अहम है, जो पिछले 18 वर्षों से इस मामले पर नजर रखे हुए थे। सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने कहा कि अभियोजन पक्ष सुरेंद्र कोली के खिलाफ ठोस और विश्वसनीय सबूत पेश नहीं कर पाया। अदालत ने माना कि जांच के दौरान कई गंभीर प्रक्रियागत खामियां रहीं, इसके चलते दोषसिद्धि बरकरार नहीं रखी जा सकती। कोर्ट ने अपने आदेश में यह भी कहा कि किसी व्यक्ति को सिर्फ परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर उम्रकैद या फांसी नहीं दी जा सकती। इससे पहले इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उत्तर प्रदेश के नोएडा के चर्चित निठारी कांड के 12 केस के आरोपी सुरेंद्र कोली और दो केस में

फांसी की सजा पाए कोठी डीएस5 के मालिक मनिंदर सिंह पंढेर को भी ने बरी कर दिया है।

न्यायालय ने इन्हें दोष मुक्त तो करार दे दिया, किंतु ये न्याय एक तरफा है। अधूरा है। निठारी कांड तो हुआ है। चर्चित निठारी कांड में निचली अदालत से कोली को एक दर्जन से अधिक मामलों में फांसी की सजा सुनाई जा चुकी है। निठारी गांव के कोठी डीएस5 के मालिक मनिंदर सिंह पंढेर को दो केस में फंसी की सजा हो चुकी है। अब जब की ये निचली अदालत से फांसी की सजा पाए ये दोनों आरोपी हाईकोर्ट ने बरी कर दिए तो व्यवस्था को यह तो बताना ही होगा कि फिर इस कांड के आरोपी कौन हैं? किसने इस कांड की 19 घटनाओं को अंजाम दिया। कांड तो हुआ ही है। ये दोनों आरोपी इसलिए बरी हो गए कि इनके विरूद्ध सुबूत नही थे, किंतु पीड़ित परिवार को भी तो न्याय चाहिए। उनके परिवार की युवतियों, बेटियों और बच्चों पर जुल्म करने वाला, उनसे व्यभिचार कर उन्हें काटकर खाने वाला कोई तो होगा? किसी ने तो ये कांड किया होगा? उसे कानून की जद में लाकर सजा कौन दिलाएगा? ये निर्दोष थे तो फिर इनकी कोठी के पास नाले में किसने मारकर इनको डाला?

29 दिसंबर 2006 को नोएडा में मोनिंदर सिंह पंढेर के घर के पीछे नाले से 19 बच्चों और महिलाओं के कंकाल मिले। मोनिंदर सिंह पंढेर और सुरेंद्र कोली गिरफ्तार किया। आठ फरवरी 2007 को कोली और पंढेर को 14 दिन की सीबीआई हिरासत में भेजा गया। मई 2007 को सीबीआई ने पंढेर को अपनी चार्जशीट में अपहरण, दुष्कर्म और हत्या के मामले में आरोप मुक्त कर दिया था। दो माह बाद अदालत की फटकार के बाद सीबीआई ने उसे मामले में सह अभियुक्त बनाया। 13 फरवरी 2009 को विशेष अदालत ने पंढेर और कोली को 15 वर्षीय किशोरी के अपहरण, दुष्कर्म और हत्या का दोषी करार देते हुए मौत की सजा सुनाई। ये पहला फैसला था। इसके बाद 11 केस में दोनों को सजा हुई। पुलिस ने इस मामले में कहा था कि कम से कम 19 युवा महिलाओं के साथ बलात्कार किया गया था, उनकी हत्या कर दी गई थी और उनके शवों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए थे। पुलिस ने उस समय कहा था कि ये हत्याएं पंढेर के घर के अंदर हुई थीं, जहां कोली नौकर के तौर पर काम करते थे। पुलिस ने आरोप लगाया कि जिन बच्चों के अवशेष बैग में छिपे हुए पाए गए थे, उन्हें कोली ने मिठाई और चॉकलेट देकर लालच देकर मार डाला था। पुलिस का कहना था कि जांच के दौरान कोली ने नरभक्षण और नेक्रोफिलिया (शवों के साथ संबंध बनाने) की बात कबूल की थी। बाद में उन्होंने अदालत में अपना कबूलनामा ये कहते हुए वापस ले लिया कि उनसे जबरन ये बयान दिलवाया गया था। सीबीआई ने सुरेंदर कोली और पंढेर के खिलाफ़ 19 मामले दर्ज किए थे। जहां कोली पर हत्या, अपहरण, बलात्कार, सबूतों को मिटाने जैसे आरोप थे तो वहीं पंढेर पर अनैतिक तस्करी का आरोप था। इस मामले की गूंज कई सालों तक देश गूंजती रही थी। लोगों ने पुलिस पर लापरवाही बरतने के आरोप लगाए थे। स्थानीय लोगों ने उस समय कहा था कि पुलिस इस मामले में इसलिए भी कार्रवाई नहीं कर सकी क्योंकि लापता होने वालों में से अधिकतर गरीब परिवार के थे।

न्यायालय ने निर्णय में ये माना कि आरोपियों के विरूद्ध सबूत नही हैं। न्यायालय ने ये नही कहा कि कांड हुआ ही नही। उसने माना कि कांड तो हुआ। 19 महिलाओं और बच्चियों के कंकाल कोठी डीएस5 के सामने नाले से मिले। अब प्रश्न यह है कि ये नही तो किसी और ने ये कांड किया है। जिसने कांड किया उसे सजा दिलाने की किसकी जिम्मेदारी है? किंतु लगता है कि न्यायालय ने इस केस के आरोपी के बरी हो जाने के बाद ये केस व्यवस्था की कबाड़ की फाइल में चला जाएगा। 2006 से न्याय की आशा में बैठे पीडित परिवार को रो पीट कर चुप हो बैठना पड़ेगा। इस निर्णय के बाद पीड़ितों के माता पिता और परिवार वालों का दुख और गहरा हो गया। अपनों को खोने वालों ने कहा कि 19 साल बाद भी हम लोगों को न्याय नहीं मिला। निठारी कांड में अपने बच्चों को खोने वाले पैरंट्स का लगभग एक ही सवाल है कि अगर पंढ़ेर और कोली निर्दोष हैं तो उनके बच्चों को किसने मारा है? एक बात और हाईकोर्ट ने कहा कि शवों की मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर जांच नहीं हुई। ये रिपोर्ट मानव तस्करी की और इशारा कर रही थी। दोनों न्यायधीश ने जांच पर नाखुशी जताते हुए ये भी कहा कि जांच बेहद खराब है। सुबूत जुटाने की मौलिक प्रक्रिया का पूरी तरह उल्लंघन किया गया। जांच एसेंसियों की नाकामी जनता के विश्वास के साथ धोखा है। हाईकोर्ट ने कहा कि जांच एजेंसियों ने अंग व्यापार के गंभीर पहलुओं की जांच किए बिना एक गरीब नौकर को खलनायक की तरह पेश किया। हाईकोर्ट ने माना कि ऐसी गंभीर चूक के कारण मिलीभगत सहित कई गंभीर निष्कर्ष संभव है। हाईकोर्ट ने यह भी माना कि दोनों आरोपियों के खिलाफ कोई सुबूत नही हैं। सुबूत के अभाव में दोनों आरोपियों को लगभग 19 साल जेल में रहना पड़ा। अकारण जेल में बिताए इनके इन सालों के लिए कौन जिम्मेदार है? इस केस में शुरूआत से ही पुलिस पर आरोप लगते रहते हैं कि वह इस मामले में रूचि नही ले रही। उसी के बाद मामला सीबीआई को गया। अब सीबीआई की जांच पर भी सवाल उठा है तो सीबीआई को अपनी जांच और प्रक्रिया पर भी सोचना और बदलाव करना होगा। क्योंकि देश में उसका बहुत सम्मान है। प्रत्येक प्रकार के टिपिकल मामले में उसी से जांच कराने की बात आती है। अब उसकी भी जांच ऐसी ही निम्न स्तरीय होगी,तो फिर उसे सोचना तो होगा ही।

प्रेरणा

एक क्षण जिसने इतिहास का रुख मोड़ दिया

अंग्रेज़ी हुकूमत का वह कठोर दौर था जब भारत की मिट्टी में हर तरफ विद्रोह की तपिश महसूस होती थी। जगह-जगह क्रांतिकारी गुप्त रूप से अंग्रेजों के खिलाफ योजनाएँ बना रहे थे और देश की आज़ादी के लिए अपने प्राणों को दांव पर लगा रहे थे। इन्हीं क्रांतिकारियों में एक नाम था—चंद्रशेखर आज़ाद। उनका नाम सुनते ही ब्रिटिश सरकार के भीतर बेचैनी फैल जाती थी। साहस, रणनीति और अकल्पनीय चतुराई—आज़ाद इन तीनों का ऐसा मिश्रण थे कि अंग्रेज़ सिपाही उनका पीछा करते-करते थक जाते, पर वे हर बार उनके हाथों से फिसलकर हवा की तरह गायब हो जाते।

एक दिन उन्हीं पर अचानक संकट आ खड़ा हुआ। आज़ाद किसी गुप्त सूचना को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से शहर के एक हिस्से में पहुंचे थे। उन्हें लगा कि सब ठीक है, लेकिन अचानक उनके पैरों ने खतरे की दस्तक महसूस कर ली। तीन-चार अंग्रेज गुप्तचर लगातार उनका पीछा कर रहे थे। उनके कदमों की आहट बदल गई थी, हवा का वजन बदला हुआ था—और आज़ाद ने भांप लिया कि वे घिर चुके हैं।

उन्होंने तुरंत दिशा बदली, एक संकरी गली में मुड़े, दूसरी तरफ जाते हुए अचानक भीड़ में घुलमिल गए। पर खतरा पीछा नहीं छोड़ रहा था। वे तेजी से मुड़ते-घूमते हुए अंततः अपने एक विश्वासपात्र साथी के घर पहुंच गए। यह घर उनके लिए कई बार सुरक्षित साबित हुआ था। उन्हें लगा कि यहां कुछ देर छिपकर तूफान गुजर जाने का इंतजार किया जा सकता है।

लेकिन किस्मत उस दिन उनके साथ उतनी उदार नहीं थी। किसी गद्दार ने पुलिस को खबर दे दी थी कि आज़ाद उसी घर में हैं। कुछ ही मिनटों में घर के बाहर से भारी जूतों की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। अंग्रेज़ सैनिकों की बंदूकों पर चमकती धातु और उनके कठोर चेहरे देखकर लगता था जैसे घर की दीवारें भी सहम गई हों।

दरवाज़ा धमाके से खोला गया और इंस्पेक्टर ने तमतमाते हुए कहा—

“हमें यकीन है कि चंद्रशेखर आज़ाद इसी घर में छिपे हैं। हम तलाशी लेंगे।”

घर का मालिक पूरी हिम्मत के साथ बोला—

“मेरे घर में कोई आज़ाद नहीं हैं।”

परंतु अंग्रेजों को किसी नागरिक की बात पर भरोसा करना कहाँ आता था? कुछ सिपाही कमरे की ओर बढ़ने लगे। घर के भीतर छिपे आज़ाद ने अपने दिल की धड़कनें तेज होते महसूस कीं। एक गलती, एक आवाज़, एक कदम और सब खत्म हो सकता था।

ठीक उसी समय घर की मालकिन—एक सामान्य दिखने वाली, पर भीतर से अग्नि-सी प्रखर महिला—धीरे-धीरे आगे आई। उसके चेहरे पर भय नहीं, बल्कि एक अद्भुत दृढ़ता थी। संकट की इस घड़ी में उसने एक पल में वह निर्णय लिया जो इतिहास में कहीं ज्यादा बड़ा साबित होने वाला था।

उस दिन मकर संक्रांति का त्योहार था। इस एक तथ्य ने उसके दिमाग में बिजली-सी चमक पैदा की। उसने अचानक गुस्से से भरी आवाज़ में भीतर की ओर चिल्लाकर कहा—

“अरे ओ लड़के! तू अभी तक क्या कर रहा है? त्योहार का दिन है और मिठाई की टोकरी उठाकर भी नहीं निकला! चल मेरे साथ, पूरे मोहल्ले में मिठाई बाँटनी है, और ये सिपाही खड़े होकर क्या सोच रहे हैं?”

उसकी आवाज़ इतनी वास्तविक, इतनी स्वाभाविक थी कि अंग्रेज पुलिस कुछ क्षण के लिए स्तब्ध रह गई। उन्हें लगा कि घर में कोई घरेलू युवक या नौकर होगा जिसे काम में ढील देने की आदत है।

अंदर बैठे आज़ाद ने यह आवाज़ सुनी और तुरंत समझ गए—यह उनका रास्ता है। इस महिला की बुद्धि ही अब उनकी ढाल है। वे जैसे किसी अभिनय का हिस्सा हों, उसी सादगी से मिठाई की बड़ी टोकरी सिर पर रखकर बाहर निकले और बिल्कुल चुपचाप उस महिला के पीछे-पीछे चल पड़े।

पुलिसवालों की निगाह उन पर गई जरूर, पर उस निगाह में सौ फीसदी लापरवाही थी। वे कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि यह साधारण-सा युवक, यह टोकरी उठाए हुआ इंसान—वही चंद्रशेखर आज़ाद हो सकता है, जिसकी तलाश में वे महीनों से शहरों, जंगलों और पहाड़ियों में भटक रहे थे।

महिला पूरी सहजता से, बिना एक पल रुके, सैनिकों के सामने से निकल गई। पुलिस पूछताछ में उलझी रह गई और पल भर में आज़ाद वहाँ से ऐसे बाहर निकल गए जैसे हवा किसी संकरे रास्ते से फिसल जाती है।

कुछ गलियाँ दूर जाकर महिला रुक गई। उसने धीमी पर आत्मविश्वास से भरी आवाज़ में कहा—

“अब आप सुरक्षित जा सकते हैं। आपकी लड़ाई हमारी लड़ाई है।”

आजाद ने उसकी ओर देखा। उनकी आँखों में कृतज्ञता, सम्मान और संकल्प की चमक थी। वे बिना कुछ बोले आगे बढ़ गए—अपने अगले गुप्त ठिकाने की ओर।

उस दिन न कोई मिठाई बाँटी गई, न कोई त्योहार मनाया गया।

पर उस एक क्षण में एक महिला की बुद्धिमानी ने गोलियों, तलवारों और पूरी अंग्रेज सेना से कहीं ज्यादा तेज़ दौड़ लगाई और एक महान क्रांतिकारी को बचा लिया।

उस क्षण ने इतिहास का रुख मोड़ दिया—

क्योंकि कभी-कभी युद्ध मैदान में नहीं, बल्कि एक सामान्य घर की दहलीज़ पर खड़े होकर जीत लिया जाता है,

और हथियारों से नहीं, बल्कि सूझबूझ से।

सेल्फ़ी ऑफ 'देखो मेरी खाने की थाली साफ़'

जब देश में करोड़ों लोग कुपोषण व भूख के संकट से जूझते हैं, तो विडंबना यह है कि देश में हर साल 92,000 करोड़ रुपये मूल्य का भोजन बर्बाद हो जाता है, जिसकी मात्रा 7.8 करोड़ टन से ज्यादा है। भोजन की यह बर्बादी मुख्य रूप से घरों व सार्वजनिक समारोहों में होती है। वहीं अन्य कारक गलत ढंग से भंडारण, कोल्ड चेन सिस्टम व परिवहन की कमी भी हैं। वर्ष 2022 के आंकड़े के अनुसार देश में हर साल प्रति व्यक्ति 55 किलो खाना बर्बाद हुआ। एक गणित के अनुसार वर्ष 2022 में जो 92 हजार करोड़ रुपये का अनाज बर्बाद हुआ, उसकी कीमत में सौ करोड़ लागत वाली 920 वंदे भारत ट्रेन तैयार हो सकती थी। संयुक्त राष्ट्र की फूड वेस्ट इंडेक्स रिपोर्ट-2021 की रिपोर्ट बताती है कि भारत में सबसे ज्यादा खाने की बर्बादी घरों में होती है।

यूं तो हम शादी व अन्य सार्वजनिक समारोहों में लोगों को प्लेट में भर-भर कर भोजन लेने और बचे खाने को कचरे में डालते देखते हैं। लेकिन हम निष्क्रिय रहते हैं। लेकिन इससे व्यथित, हरियाणा के जींद में एक शख्स ने अन्न का सम्मान करने की एक अनूठी मुहिम बच्चों के बीच स्कूलों से शुरू की है। 'वन अर्थ, वन फैमिली' संस्था बच्चों को संस्कार दे रही है कि वे उतना ही भोजन लें, जितना खा सकते हैं, जिसके सूत्रधार हैं संस्था के अश्वनी 'जिज्ञासु'। बच्चों के लिए उनका प्रेरक नारा है 'उतना लो थाली में व्यर्थ न जाए नाली में।' अश्वनी इस नारे को लेकर जन-जागरण अभियान में जुटे हैं। वे जानते हैं कि कल के राष्ट्र निर्माता बच्चों को पहले संस्कार दिए जाने चाहिए। हो सकता है कि बड़ों को समझाने में, उनके ईगो को ठेस पहुंचे। अतः उन्होंने इस मुहिम को स्कूल-कॉलेजों से शुरू किया है। वे शादी-पार्टी, जागरण व विशेष उत्सवों पर बच्चों को संकल्प कराते हैं कि 'मैं अन्न का अपमान नहीं करता।'

'जिज्ञासु' कहते हैं कि एक शादी समारोह में यदि एक हजार लोगों का खाना बनता है तो कम-से-कम डेढ़ से दो सौ लोगों का खाना बर्बाद होता है। ये अन्न का अपमान है। हम नहीं सोचते कि इस अन्न को पैदा करने में किसान ने कितना खून-पसीना एक किया है। जिस देश में करोड़ों लोग भूखे सोते हों, वहां इतने भोजन की बर्बादी अपराध जैसा है। एक भूखे को ही रोटी की कीमत का अहसास होता है।

समाज में जागरूकता के लिए कई अभियानों से जुड़े अश्वनी ने इस मुहिम को सिरे चढ़ाने के लिए 'वन अर्थ, वन फैमिली' नामक ट्रस्ट बनाया है। जीवनपर्यंत अविवाहित रहकर समाज में बदलाव की मुहिम में जुटे अश्वनी इससे पहले गरीबों को भोजन देने के 'रोटी बैंक' 'पहली रोटी गाय माता की' जैसे अभियानों से जुड़े रहे हैं। 'पहली रोटी गाय माता की' अभियान के तहत वे स्कूलों में जागरूकता अभियान चलाते रहे हैं। हर रोज जो हजारों रोटियां बच्चे उत्साह से जुटाते रहे हैं, उन्हें गोशालाओं में भेज देते। वे मानते हैं कि दूसरों के दुख को अपना समझना ही परमात्मा को अनुभव करने की अनुभूति है। अभियान का मकसद यह भी रहा है कि बच्चों में देने के भाव का विकास हो सके।

मुहिम में 'रोटी बैंक' तहत सेवा कार्य जींद, पानीपत, टोहाना व चंडीगढ़ के स्कूलों में लंबे समय तक चला। कालांतर 'विचार मंच' के तहत यह एक मुहिम बन गई। संस्था चंडीगढ़ व हरियाणा के अन्य शहरों में शादी या अन्य उत्सव के बाद बचे खाने को एकत्र कर उसे जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाती रही है। समारोह में बचे व्यंजन जब जरूरतमंद लोगों तक पहुंचते तो उनके लिये यह उत्सव का हिस्सा बनने जैसा होता। चेहरों पर सुकून के भाव उभरते।

अब 'रोटी बैक' मुहिम के बाद जिज्ञासु ने 'सेल्फी ऑफ देखो मेरी थाली साफ' मुहिम को गति दी। वे बच्चों से संकल्प करवाते हैं कि अन्न ही जीवन है और हम इसका अपमान नहीं करते। इसमें विवाह व अन्य समारोहों में बच्चों की थाली चेक होती है। फिर बच्चा सेल्फी लेकर बोलता 'देखो मेरी खाने की थाली साफ है'। अधिक बच्चों को प्रेरित करने हेतु बच्चे की सेल्फी नाम व मोबाइल नंबर के साथ सोशल मीडिया पर डाली जाती है। फिर बच्चों के नाम ड्रा में शामिल करके उन्हें सम्मानित किया जाता है। उत्साहित बच्चे कहते दिखते हैं 'अंकल देखो, अन्न का एक भी दाना वेस्ट नहीं किया। मुझे भी ड्रा में शामिल कीजिए।'

मुहिम के तहत शादी व अन्य पार्टियों में बच्चों द्वारा तीन बैनर्स लगाये जाते हैं। लोगों को जागरूक करने के लिए पहले में लिखा होता 'उतना लो थाली में, व्यर्थ न जाए नाली में।' दूसरे बैनर्स में लिखा होता 'सेल्फी ऑफ देखो मेरी थाली साफ है।' तीसरे बैनर में लिखा होता है 'अन्न ही ब्रह्म, अन्न ही जीवन।'

इसके अलावा सोशल मीडिया में चिपके रहने वाले बच्चों को भारतीय संस्कारों से जोड़ने की मुहिम भी अश्वनी चला रहे हैं। दैनिक जीवन में भारतीय संस्कारों वाली 25 आदतों से जोड़कर सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार दिए जाते हैं। ये दैनिक जीवन की आदतें उन्हें अच्छा इंसान बनाने हेतु प्रेरित करती हैं। बच्चे इन आदतों को अपनाने वाले फॉर्म पर अभिभावक से हस्ताक्षर करवाते हैं। अब कुछ बच्चे भी शिक्षक बन गए हैं। आदत के सौ दिन पूरा होने पर स्कूल में बेस्ट किड्स अवार्ड से सम्मानित किया जाता है। बच्चों को सिखाया जाता है कि 'जरूरतमंद के चेहरे पर मुस्कान लाना ही सच्ची पूजा है'।

अभियान

देश के उन दिव्य लक्ष्मी स्थलों की अनोखी यात्रा, जहाँ हर प्रार्थना सच होती है

भारत की पवित्र धरती पर माता लक्ष्मी के अनेक मंदिर ऐसे बसे हुए हैं, जिनकी दिव्यता, आस्था और ऊर्जा का अनुभव करते ही मन श्रद्धा से भर उठता है। कहते हैं कि जहाँ माँ लक्ष्मी का वास होता है, वहाँ केवल धन-संपदा ही नहीं, बल्कि शांति, सौभाग्य, संतुलन और मानसिक प्रकाश भी मिलता है। हर दीपावली, हर शुभ मुहूर्त और हर प्रार्थना के क्षण में इन मंदिरों की सीढ़ियाँ अनगिनत भक्तों से भर जाती हैं।

देवी लक्ष्मी की कृपा को पाने के लिए लोग पूरे-पूरे परिवार के साथ इन पवित्र धामों की यात्रा करते हैं, क्योंकि यह विश्वास पीढ़ियों से चला आ रहा है कि इन मंदिरों में की गई पूजा न सिर्फ व्यक्तिगत इच्छाओं को पूर्ण करती है, बल्कि घर-परिवार के जीवन में स्थिरता, बढ़ोतरी और खुशहाली भी लेकर आती है।

भारत में फैले इन प्रसिद्ध लक्ष्मी धामों में हर मंदिर की अपनी अनोखी कथा, अपनी अलग ऊर्जा और अपनी दिव्य अनुभूति है, और इनकी यात्रा मात्र दर्शन नहीं, बल्कि एक ऐसी आध्यात्मिक अनुभूति है जो मन को भीतर तक प्रभावित करती है।

मुंबई के दक्षिण हिस्से में स्थित महालक्ष्मी मंदिर समुद्र की ठंडी हवाओं के बीच अपनी दिव्य चमक के साथ खड़ा है। यह मंदिर 1831 में बनाया गया था और आज भी अपनी शक्ति से भक्तों को आकर्षित करता है। हर दीपावली पर यहाँ मानो पूरे शहर का उत्साह उमड़ पड़ता है। भक्त धन, समृद्धि और सौभाग्य की देवी से आशीष पाने के लिए सुबह से रात तक कतार में खड़े रहते हैं। जैसे ही आरती की घंटियाँ बजती हैं, समुद्र की लहरें भी मानो उनकी ताल पर झूम उठती हैं।

दिल्ली का लक्ष्मी नारायण मंदिर, जिसे लोग बिरला मंदिर के नाम से जानते हैं, राजधानी के बीचोबीच एक दिव्य श्वेत स्वप्न की तरह खड़ा है। इसकी वास्तुकला देखने वाले को मंत्रमुग्ध कर देती है। दीपावली की रात यह मंदिर दीपमालाओं से जगमग उठता है, और ऐसा लगता है मानो स्वयं देवी लक्ष्मी अपने स्वर्ण कमल पर बैठकर पूरे परिसर को आशीर्वाद दे रही हों। इस मंदिर में होने वाले भजन, कीर्तन और विशेष पूजा विधियाँ दिलों में ऐसी रोशनी जगा देती हैं जो हफ्तों तक महसूस होती रहती है।

चेन्नई का अष्ट लक्ष्मी मंदिर अपनी अनोखी संरचना और समुद्र की सुगंध से भरे वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ आठ स्वरूपों की पूजा होती है—आदि लक्ष्मी, धन लक्ष्मी, धैर्य लक्ष्मी, संतति लक्ष्मी, विजय लक्ष्मी, गज लक्ष्मी, विद्या लक्ष्मी और धान्य लक्ष्मी। इन आठ स्वरूपों का अर्थ है—जीवन के आठ महत्वपूर्ण स्तंभ। यहाँ आने वाला हर भक्त मानो अपने जीवन के आठ द्वारों को प्रकाश से भर कर लौटता है। दीपावली की रात समुद्र की लहरों की आवाज़ और मंदिर की दिव्य आरती मिलकर एक अलौकिक अनुभव रचती है।

आंध्र प्रदेश के तिरुपति के पास स्थित पद्मावती अम्मावारी मंदिर को देवी पद्मावती का पवित्र धाम माना जाता है, जो माता लक्ष्मी का ही अवतार हैं। यहाँ की मान्यता है कि इस मंदिर में पूजा करने से वैवाहिक जीवन में सद्भाव, प्रेम और स्थिरता आती है। दीपावली के दौरान जब सैकड़ों दीप प्रज्वलित होकर मंदिर परिसर को सोने की तरह चमकाते हैं, तो ऐसा लगता है मानो स्वयं देवी अपने कमलासन से उठकर भक्तों का आशीर्वाद दे रही हों।

कोलकाता का महालक्ष्मी मंदिर उत्साह, पवित्रता और पूजा की उमंग से भरा हुआ स्थान है। दीपावली की रात यहाँ की रौनक देखने लायक होती है। मंदिर को रंग-बिरंगी लाइटों, फूलों और दीपों से सजाया जाता है। भक्त एक साथ बैठकर महालक्ष्मी चालीसा का पाठ करते हैं, और ऐसा लगता है कि हर दीप एक नई आशा जगाता है, हर फूल एक नई प्रसन्नता का संदेश देता है।

और दक्षिण भारत के केरल में स्थित चोट्टानिकरा मंदिर की ऊर्जा तो अद्भुत मानी जाती है। यहाँ देवी को भगवती राजराजेश्वरी के रूप में पूजा जाता है। दिन के अलग-अलग समय पर देवी अलग स्वरूपों में दर्शन देती हैं—सुबह सरस्वती के रूप में, दोपहर में लक्ष्मी के रूप में और शाम में महाकाली के रूप में। इन तीनों स्वरूपों का मिलना भक्तों के मन, बुद्धि और शक्ति तीनों को संतुलन प्रदान करता है। दीपावली के अवसर पर यहाँ की विशेष आरती और मंदिर की पारंपरिक सजावट पूरे वातावरण को अत्यंत पवित्र और आध्यात्मिक बना देती है।

इन सभी धामों की यात्रा कहने को तो कुछ घंटों के दर्शन का अनुभव है, लेकिन वास्तव में यह आत्मा को छूने वाली एक लंबी आध्यात्मिक यात्रा है। यहाँ का हर दीपक, हर घंटी, हर सुगंध और हर आरती का स्वर—भक्त के भीतर छिपे प्रकाश को जगाता है, और जीवन में सौभाग्य की नई किरणें भर देता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा जी की १५०वीं जन्म जयंती

तथा

जनजातीय गौरव दिवस का उत्सव

माननीय प्रधानमंत्री
श्री नरेन्द्र मोदी जी
के करकमलों द्वारा
₹९,७०० करोड़ से अधिक के विकास
परियोजनाओं का
लोकार्पण और **शिलान्यास**

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

प्रेरक उपस्थिति

श्री आचार्य देवव्रत
माननीय राज्यपाल, गुजरात

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

विशेष अतिथि

श्री नरेशभाई पटेल
माननीय मंत्री, गुजरात

श्री मनसुखभाई वसावा
माननीय सांसद, गुजरात

डॉ. जयरामभाई गामित
माननीय रा.क. मंत्री, गुजरात

श्री जगदीश विश्वकर्मा
माननीय विधायक, गुजरात

दिनांकः १५-११-२०२५ । समयः दोपहर २ बजे । स्थानः डेडियापाड़ा, जिला नर्मदा

राज्य के २३ आदिवासी तालुकाओं में कार्यक्रम का सीधा प्रसारण

हर घर स्वदेशी, घर-घर स्वदेशी

गुजरात सरकार आदिवासी भाइयों-बहनों के सर्वांगीण विकास के लिए हमेशा प्रतिबद्ध है।
- **श्री हर्ष संघवी**, माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

अंतरिक्ष विज्ञान में दर्ज हुई अनोखी वापसी, पृथ्वी की ऊँची कक्षा से चंद्र कक्षा तक की अद्भुत वैज्ञानिक यात्रा

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि अंतरिक्ष अभियानों में भारत केवल आगे बढ़ ही नहीं रहा, बल्कि उन जटिल प्रयोगों को भी अंजाम दे रहा है जो विश्व के कुछ ही देशों ने हासिल किए हैं। चंद्रयान-3 का प्रोपल्शन मॉड्यूल, जिसने 2023 में चंद्रमा की सतह पर लैंडर और रोवर को सफलतापूर्वक स्थापित कराया था, दो वर्षों तक अंतरिक्ष की गहरी कक्षाओं में अपनी वैज्ञानिक यात्रा जारी रखने के बाद अब 2025 में एक अद्भुत घटना के साथ दोबारा चंद्र कक्षा में लौट आया है। यह वापसी किसी योजनाबद्ध प्रक्रिया का परिणाम नहीं, बल्कि प्राकृतिक कक्षीय परिवर्तनों, गुरुत्वीय प्रभावों और दीर्घकालीन ऑर्बिटल डायनेमिक्स के अनोखे मेल का चमत्कार है।

अगस्त 2023 में जहां लैंडर विक्रम और रोवर प्रज्ञान चंद्रमा की सतह पर वैज्ञानिक प्रयोगों में जुट गए थे, वहीं प्रोपल्शन मॉड्यूल चंद्र कक्षा में घूमता रहा। बाद में अक्टूबर 2023 में इसे ट्रांस-अर्थ इंजेक्शन के माध्यम से पृथ्वी की ऊँची कक्षा में भेज दिया गया था। इस चरण के बाद अधिकांश अंतरिक्ष अभियानों में मॉड्यूल अपनी भूमिका पूरी करके निष्क्रिय मान लिया जाता

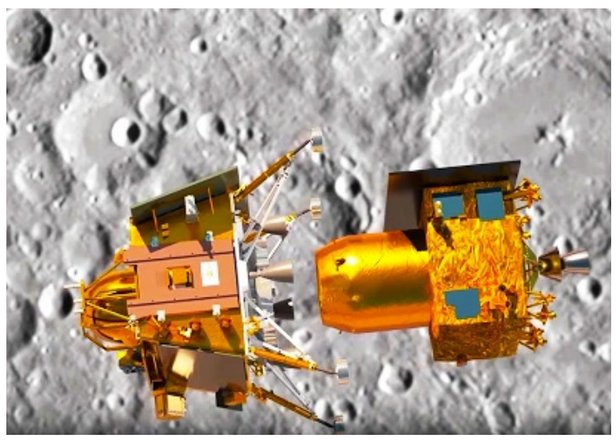

है, लेकिन चंद्रयान-3 के मॉड्यूल ने अंतरिक्ष विज्ञान को एक नया अध्याय दे दिया। कक्षा में स्वाभाविक होने वाले दीर्घकालिक झुकाव परिवर्तन, गुरुत्वाकर्षण के सूक्ष्म बल और सूर्य-पृथ्वी-चंद्रमा प्रणाली के जटिल खिंचावों के बीच यह मॉड्यूल धीरे-धीरे एक ऐसी राह पर बढ़ता गया जिसने अंततः उसे वर्ष 2025 में दोबारा चंद्रमा के प्रभाव क्षेत्र में पहुँचा दिया।

इसरो के अनुसार, 4 नवंबर 2025 को मॉड्यूल ने चंद्रमा के प्रभाव क्षेत्र में प्रवेश किया और 6 नवंबर को 3,740 किलोमीटर की दूरी से पहला फ्लाईबाई पूरा किया। उस क्षण यह मॉड्यूल डीप स्पेस नेटवर्क की सीधी निगरानी में नहीं था, फिर भी उसके पथ, गति और कक्षीय गणित को वैज्ञानिक रूप से सुरक्षित दर्ज किया गया। 11 नवंबर को दूसरा फ्लाईबाई हुआ, इस बार 4,537 किलोमीटर की दूरी से। यह घटना पूरी तरह निगरानी में रही और इसने वैज्ञानिकों को चंद्रमा से गुरुत्वीय सहायता प्राप्त होने, कक्षा के ऊँचाई बढ़ने और झुकाव में बदलाव जैसे महत्वपूर्ण डेटा उपलब्ध कराए।

मॉड्यूल का कक्षीय झुकाव 34 डिग्री से घटकर 22 डिग्री हो जाना अपने-आप में एक बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धि है, क्योंकि इस बदलाव ने यह सिद्ध किया कि प्राकृतिक कक्षीय परिवर्तन भी अंतरिक्ष यान की लंबी यात्रा में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं।

फ्लाईबाई के दौरान इसरो का टेलीमेट्री, ट्रैकिंग और कमांड नेटवर्क लगातार मॉड्यूल का पीछा करता रहा। डेटा ने यह समझने में जबरदस्त मदद की कि भविष्य में अंतरिक्ष यान कैसे चंद्र कक्षा से पृथ्वी, पृथ्वी से मंगल, या किसी अन्य ग्रह तक वापस लौट सकते हैं। अंतरिक्ष अभियानों की वापसी रणनीतियाँ—जिनमें गुरुत्वीय सहायता, कक्षा परिवर्तन और न्यूनतम ईंधन खर्च जैसे महत्त्वपूर्ण पहलू आते हैं—इस डेटा से और अधिक मजबूती से विकसित की जा सकेंगी। चंद्र कक्षीय नेविगेशन और अंतरिक्ष यान की स्थिरता से जुड़ी जानकारियाँ वैज्ञानिकों को अगले दशक में होने वाले मानवयुक्त और गहरे अंतरिक्ष अभियानों के लिए नई दिशा देंगी।

फ्लाईबाई स्वयं में एक अद्भुत तकनीक है, जिसमें अंतरिक्ष यान किसी ग्रह, चंद्रमा या किसी अन्य पिंड के पास से अत्यंत करीबी दूरी पर गुजरता है। इस दौरान वह उस पिंड के गुरुत्वाकर्षण को उपयोग में लाकर अपनी दिशा, गति और कक्षा को बदल सकता है। यही कारण है कि इसे गहरे अंतरिक्ष अभियानों—विशेषकर मंगल, बृहस्पति या शनि की लंबी यात्राओं—में बेहद महत्वपूर्ण तकनीक माना जाता है। चंद्रयान-3 के प्रोपल्शन मॉड्यूल की यह अनोखी वापसी भविष्य के उस दौर की नींव रखती है, जब मिशन केवल अपनी मूल यात्रा ही पूरी नहीं करेंगे, बल्कि अपनी स्थिरता, दीर्घजीविता और वैज्ञानिक क्षमता के आधार पर वर्षों बाद भी नई खोजें करते रहेंगे।

चंद्रयान-3 मॉड्यूल की यह वैज्ञानिक यात्रा न केवल इसरो की तकनीकी क्षमता को रेखांकित करती है, बल्कि यह भी संदेश देती है कि भारत अब उन जटिल अंतरिक्ष गणनाओं और दीर्घकालिक अंतरिक्ष गतिशीलताओं में महारत हासिल कर रहा है जो अंतरिक्ष महाशक्तियों को परिभाषित करती हैं। यह केवल एक मॉड्यूल की चंद्र कक्षा में वापसी नहीं, बल्कि अंतरिक्ष विज्ञान के इतिहास में दर्ज होने वाली वह मूल्यवान कहानी है, जिसमें एक मिशन ने अपने मूल उद्देश्य से कहीं अधिक आगे बढ़कर ब्रह्मांड को समझने के नए द्वार खोल दिए।

ईडी के तलब पर अनिल अंबानी की गैरहाजिरी से बढ़ा तनाव: वर्चुअल उपस्थिति की मांग

दिल्ली की सर्द सुबह में जब प्रवर्तन निदेशालय के कार्यालय में हलचल तेज थी, तभी एक बार फिर यह स्पष्ट हो गया कि कॉरपोरेट जगत और जांच एजेंसियों के बीच का टकराव केवल कागज़ी नहीं, बल्कि सख्त प्रक्रियात्मक लड़ाई में बदल चुका है। रिलायंस एडीएजी समूह के चेयरमैन अनिल डी. अंबानी को बुधवार को फेमा से जुड़े मामले में बयान दर्ज कराने के लिए ईडी ने तलब किया था—लेकिन दूसरी बार भी वह सामने नहीं आए।

उनकी जगह ईडी को एक ई-मेल मिला, जिसमें अंबानी ने वर्चुअल माध्यम से पूछताछ में शामिल होने की अनुमति मांगी थी। लेकिन ईडी ने साफ शब्दों में यह अनुरोध ठुकरा दिया। एजेंसी का कहना था कि जांच की प्रकृति प्रत्यक्ष उपस्थिति की मांग करती है और ऑनलाइन पूछताछ किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं है। इससे संकेत मिला कि एजेंसी इस मामले को बेहद गंभीरता से देख रही है और किसी भी प्रकार की रियायत देने को तैयार नहीं।

यह पूरा मामला विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (FEMA) से जुड़े लेनदेन की जांच का हिस्सा है। हालांकि यह पीएमएलए यानी धन शोधन मामले की तरह कठोर आपराधिक श्रेणी में नहीं आता, लेकिन कई बार ऐसे फेमा मामलों की तह में पहुंचने से बड़े वित्तीय नेटवर्क और संदिग्ध लेनदेन की परतें खुलती हैं।

अनिल अंबानी के प्रवक्ता ने स्थिति को

संभालने की कोशिश करते हुए कहा कि कारोबारी जांच में पूरी तरह सहयोग करने के इच्छुक हैं और ईडी द्वारा पूछे जाने वाले सभी सवालों का उत्तर देने को तैयार हैं। प्रवक्ता ने यह भी जोर देकर कहा कि यह मामला सिर्फ फेमा जांच का है, जिसमें कोई मनी लॉन्ड्रिंग का पहलू शामिल नहीं है। अंबानी की टीम का पक्ष साफ है—वे उपस्थित होने से पीछे नहीं हट रहे, लेकिन पूछताछ का तरीका वर्चुअल हो।

हालांकि ईडी की जिद भी उतनी ही साफ है। इस तरह की उच्च-स्तरीय वित्तीय जांच में कई बार दस्तावेज़, फाइलें, तत्काल तुलना और एजेंसी की अपनी पूछताछ शैली की ज़रूरत होती है, जिसमें प्रत्यक्ष उपस्थिति को ही अनिवार्य माना जाता है। इसलिए एजेंसी का यह कड़ा रुख बताता है कि जांच किसी निर्णायक मोड़ पर है और वे किसी भी ढील के बिना इसे आगे बढ़ाना चाहते हैं।

अब सवाल यह है कि क्या अनिल अंबानी अगली तारीख पर प्रत्यक्ष रूप से ईडी के सामने उपस्थित होंगे? या फिर उनके और एजेंसी के बीच यह रस्साकशी आगे भी जारी रहेगी?

फिलहाल इतना तय है कि इस केस ने दिल्ली की जांच गलियारों और कारोबारी जगत दोनों में एक महत्वपूर्ण हलचल पैदा कर दी है—और आने वाले दिनों में इसका असर और गहरा दिखाई दे सकता है।

राजकोट-पोरबंदर ट्रेन को माननीय मंत्री श्री मनसुख मांडविया एवं श्री अर्जुन मोढवाडिया ने हरी झंडी दिखाकर किया शुभारंभ

डॉ. मनसुख मांडविया, माननीय केंद्रीय श्रम, रोजगार, युवा मामले और खेल मंत्री, भारत सरकार, श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया, माननीय मंत्री वन एवं पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी – गुजरात सरकार एवं राजकोट के कार्यक्रम में उपस्थित अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा 14 नवम्बर, 2025 (शुक्रवार) को राजकोट रेलवे स्टेशन से राजकोट-पोरबंदर के बीच चलने वाली शुरूआती स्पेशल ट्रेन (Inaugural Special) को हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया गया।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया की ट्रेन नंबर 09561 राजकोट-पोरबंदर शुरूआती स्पेशल, राजकोट स्टेशन से सुबह 10.30 बजे चली। डॉ. मनसुख मांडविया, माननीय केंद्रीय श्रम, रोजगार, युवा मामले और खेल मंत्री, भारत सरकार, श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया, माननीय मंत्री वन एवं पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी – गुजरात सरकार एवं अन्य महानुभावों ने राजकोट-पोरबंदर शुरूआती स्पेशल (Inaugural Special) में राजकोट से बैठकर पोरबंदर तक की यात्रा की। राजकोट-पोरबंदर सेक्शन के बीच आने वाले भावनगर मंडल के सभी स्टेशनों पर डॉ. मनसुख मांडविया, माननीय केंद्रीय श्रम, रोजगार, युवा मामले और

खेल मंत्री, भारत सरकार, श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया, माननीय मंत्री वन एवं पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी – गुजरात सरकार का स्थानीय प्रतिनिधियों एवं आम जनता द्वारा स्वागत किया गया तथा ट्रेन चलने की खुशी व्यक्त की गई एवं आभार प्रकट किया गया ।

राजकोट - पोरबंदर ट्रेन के शुभारंभ कार्यक्रम में माननीय राज्यसभा सांसद श्री रामभाई मोकरिया, माननीय सांसद राजकोट श्री परशोत्तम रुपाला, माननीया सांसद जामनगर श्रीमती पूनमबेन माडम, जिला अध्यक्ष पोरबंदर (भाजपा) श्रीमती चेतनाबेन तिवारी, जिला पंचायत अध्यक्ष पोरबंदर श्री पर्वतभाई परमार, जिला प्रभारी पोरबंदर श्री प्रदीपभाई खेमानी एवं अन्य गणमान्य अतिथि शामिल हुए।

भावनगर मंडल के द्वारा आयोजित कार्यक्रम में माननीय मंत्री श्री मनसुख मांडविया जी और श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया जी ने उपस्थित यात्रियों एवं आम जनता को संबोधित किया।

भावनगर रेलवे मंडल पर ट्रेन के स्वागत का मुख्य कार्यक्रम पोरबंदर रेलवे स्टेशन पर संपन्न हुआ। इस अवसर पर पोरबंदर रेलवे स्टेशन पर मुख्य अतिथीगण के साथ अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इनके अलावा मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा एवं उनकी टीम तथा रेलयात्री, आम जनता एवं मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित थे।

ट्रेन नंबर 59561 राजकोट-पोरबंदर पैसेन्जर दैनिक 15.11.2025 से प्रतिदिन नियमित रूप से अपने निर्धारित समयानुसार चलेगी। यह ट्रेन राजकोट स्टेशन से सुबह 8.35 बजे प्रस्थान करेगी एवं 13.15 बजे पोरबंदर स्टेशन पहुंचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन नंबर 59562 पोरबंदर-राजकोट पैसेन्जर दैनिक 15.11.2025 से प्रतिदिन नियमित रूप से अपने निर्धारित समयानुसार चलेगी। यह ट्रेन पोरबंदर से 14.30 बजे प्रस्थान करेगी एवं 18.55 बजे राजकोट स्टेशन पहुंचेगी।

ट्रेन नंबर 59564 पोरबंदर-राजकोट पैसेन्जर (सप्ताह में 5 दिन, गुरूवार और रविवार को छोड़कर) ट्रेन 15.11.2025 से पोरबंदर स्टेशन से सुबह 7.50 बजे प्रस्थान करेगी एवं 12.35 बजे राजकोट स्टेशन पहुंचेगी।

इसी प्रकार, ट्रेन नंबर 59563 राजकोट-पोरबंदर पैसेन्जर (सप्ताह में 5 दिन, बुधवार और शनिवार को छोड़कर) ट्रेन 16.11.2025 से राजकोट स्टेशन से दोपहर 14.50 बजे प्रस्थान करेगी एवं 20.30 बजे पोरबंदर स्टेशन पहुंचेगी।

उपरोक्त सभी ट्रेनें अपनी यात्रा के दौरान भक्तिनगर, रीबडा, गोंडल, वीरपुर, नवागढ़, जेतलसर, धोराजी, उपलेटा, पानेली मोटी, जाम जोधपुर, बालवा, काटकोला, वांसजालिया और राणावाव स्टेशनों पर दोनों दिशाओं में रूकेंगी।

अक्टूबर माह में वडोदरा मंडल की उपलब्धियां,ऑटो ट्रेक्टर का हुआ पहली बार लदान,टिकट चेकिंग में 2.22 करोड़ की अब तक की सर्वोच्च वसूली

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल ने अक्टूबर माह में यात्री सेवा, माल लदान,टिकट जांच, संरक्षा, यात्री सुविधाओं आदि के क्षेत्रों में प्रभावशाली प्रदर्शन हासिल किया। ये उपलब्धियां पश्चिम रेलवे के के वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के गतिशील नेतृत्व और बहुमूल्य मार्गदर्शन में संभव हुई हैं।

वडोदरा मंडल द्वारा दिवाली और छठ पूजा के त्योहारी सीज़न के दौरान यात्रियों की सुविधा और आरामदायक यात्रा सुनिश्चित करने के लिए व्यापक प्रबंध किए गए। मंडल द्वारा परिचालित नियमित एवं 6 स्पेशल ट्रेनों के 19 फेरों के जरिये लगभग 30 लाख से ज्यादा यात्रिओं ने उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल में अपने गंतव्य तक यात्रा की है। वडोदरा मंडल द्वारा मऊ , गोरखपुर , कोलकत्ता , कटिहार ,जयनगर और समस्तीपुर के लिए स्पेशल ट्रेनें चलायी गयी।

नियमित ट्रेनों के साथ साथ स्पेशल ट्रेनों का परिचालन मंडल के लिए चुनौती रहा, इन परिस्थितिओं में भी अक्टूबर माह में मंडल में ट्रेनों की समयपालनता 91. 73 प्रतिशत रही। वडोदरा मार्शलिंग यार्ड से पहली बार कर्नाटक राज्य के क्यारकोप के लिए ऑटो ट्रेक्टर का लदान कर सफलता पायी गयी।

अक्टूबर माह में मंडल ने माल लदान के क्षेत्र में 1. 29 MT का माल लदान

हासिल किया तो वही यात्री राजस्व के क्षेत्र में 56.24 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया गया।

वडोदरा मंडल के वाणिज्य विभाग के टिकट जांच कर्मचारियों की सतर्कता और मेहनत के परिणामस्वरूप 2.22 करोड़ की अब तक की सर्वोच्च वसूली दर्ज की गई है, जो नवंबर 2021 के पिछले रिकॉर्ड 1.94 करोड़ को पार कर गई है।

मंडल के लिए संरक्षा सर्वोपरि है , 41 रेल कर्मियों को सुरक्षित ट्रेन परिचालन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए सम्मानित किया। इन रेल कर्मियों को ड्यूटी के दौरान उनकी सजगता एवं सतर्कता के कारण अप्रिय घटनाओं को रोकने में उनके योगदान के लिए प्रमाण-पत्र एवं मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया।

ट्रेन परिचालन में विफलताओं को कम करने और संरक्षा में वृद्धि के लिए मल्टी सेक्शन एक्सल काउंटर को सायन यार्ड में लगाया गया है। साथ ही महेमदाबाद स्टेशन के एलसी गेट संख्या 290 पर इलेक्ट्रिकल लिफ्टिंग बैरियर के प्रतिस्थापन कार्य को पूरा किया गया।

विश्वामित्री–जोगट सेक्शन के प्रतापनगर–डभोई स्टेशनों के बीच क्रॉसिंग सुविधा प्रदान करने और 'D' श्रेणी स्टेशन को 'B' श्रेणी स्टेशन में अपग्रेड करने के कार्य के तहत, कुंडेला स्टेशन पर नया सेंट्रलाइज्ड इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग कमीशन कर दिया गया है।

पश्चिम रेलवे का वडोदरा मंडल सेवा, संरक्षा और गति के मूल मंत्र को आत्मसात कर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

साबरमती रेलवे स्टेशन पर "वंदे मातरम्" प्रदर्शनी का आयोजन

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा साबरमती रेलवे स्टेशन पर "वंदे मातरम्" प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। इस प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य भारत के स्वतंत्रता संग्राम, वीर स्वतंत्रता सेनानियों तथा राष्ट्रभक्ति की गौरवशाली परंपरा को जन–जन तक पहुँचाना है।

प्रदर्शनी में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े दुर्लभ दस्तावेज़, ऐतिहासिक चित्र, वीर सेनानियों के प्रेरक जीवन प्रसंग, देशभक्ति साहित्य तथा विभिन्न कला–कृतियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया है। विशेष आकर्षण के रूप में "वंदे मातरम्" गीत की रचना, उसका ऐतिहासिक महत्व तथा उससे जुड़े प्रमुख प्रसंगों को सुंदर, प्रभावी व दर्शनीय रूप में प्रस्तुत किया गया है।

"वंदे मातरम्" केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, राष्ट्रप्रेम और मातृभूमि के प्रति समर्पण का अमर प्रतीक है। स्वतंत्रता संग्राम के दौर में इस गीत ने देशवासियों में अदम्य उत्साह, साहस और एकता का संचार किया। आज भी "वंदे मातरम्" हमें राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रहित में योगदान देने की प्रेरणा प्रदान करता है।

यह प्रदर्शनी देशभक्ति, इतिहास और संस्कृति से ओत–प्रोत अनुभव प्रदान करती है तथा सभी आयु वर्ग के आगंतुकों को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की गौरवशाली गाथा से जोड़ने का उत्कृष्ट मंच सिद्ध हो रही है।

भगवान बिरसा मुंडा जयंती एवं जनजातीय गौरव सप्ताह का भावनगर मंडल में उत्साहपूर्वक आयोजन

भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के पावन अवसर पर पूरे देश में 01 नवम्बर से 15 नवम्बर तक जनजातीय गौरव पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इसी उपलक्ष्य में भावनगर मंडल में आज, दिनांक 14 नवम्बर 2025 को महान स्वतंत्रता सेनानी एवं जननायक भगवान बिरसा मुंडा जी की जयंती बड़े हर्षोल्लास, उत्साह एवं श्रद्धा के साथ मनाई गई। इस अवसर पर मंडल सभागार में "जनजातीय गौरव सप्ताह" अंतर्गत विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमाँशु शर्मा की अध्यक्षता में हुआ। सर्वप्रथम भगवान बिरसा मुंडा जी के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इसके पश्चात उनके जीवन, संघर्ष एवं स्वतंत्रता संग्राम

में अमूल्य योगदान पर आधारित प्रेरक वृत्तचित्र प्रदर्शित किया गया।

अपने संबोधन में अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमाँशु शर्मा ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा ने न केवल ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष कर आदिवासी समाज को एकजुट किया, बल्कि समाज सुधार एवं राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए भी विशिष्ट योगदान दिया। उनका सम्पूर्ण जीवन संघर्ष, आत्मसम्मान और देशभक्ति का प्रेरक प्रतीक है, जिससे वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों को निरंतर प्रेरणा मिलती रहेगी।

सेमिनार के दौरान वक्ताओं द्वारा भगवान बिरसा मुंडा के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान तथा आदिवासी समाज के उत्थान हेतु किए गए उनके कार्यों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में उपस्थित कर्मचारियों को उनके जीवन पर आधारित एक प्रेरणादायी शॉर्ट फिल्म भी प्रदर्शित की गई।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में शाखा अधिकारीगण, कर्मचारीगण, ट्रेड यूनियन एवं एसोसिएशन के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम का सफल आयोजन वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन के मार्गदर्शन में तथा सहायक कार्मिक अधिकारी (I) श्री वाई. राधेश्याम के समन्वय से किया गया। कार्यक्रम का संचालन कार्मिक विभाग के मुख्य कर्मचारी एवं कल्याण निरीक्षक श्री शैलेश कुमार परमार द्वारा किया गया।

बांद्रा टर्मिनस-बरौनी एक्सप्रेस पिपराइच स्टेशन पर नहीं रुकेगी

पूर्वोत्तर रेलवे के पिपराइच स्टेशन पर चल रहे नॉन-इंटरलॉकिंग कार्य के कारण 16 नवंबर, 2025 को बांद्रा टर्मिनस से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19037 बांद्रा टर्मिनस-बरौनी एक्सप्रेस पिपराइच स्टेशन पर नहीं रुकेगी। इसी प्रकार, 18 नवंबर, 2025 को बरौनी से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19038 बरौनी-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस पिपराइच स्टेशन पर नहीं रुकेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त परिवर्तन को ध्यान में रखकर यात्रा करें।

पश्चिम रेलवे बांद्रा टर्मिनस एवं दुर्गापुरा के बीच चलाएगी स्पेशल ट्रेन

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा अतिरिक्त यात्री यातायात की मांग को पूरा करने के उद्देश्य से बांद्रा टर्मिनस एवं दुर्गापुरा स्टेशन के बीच विशेष किराए पर एक स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण इस प्रकार है:

ट्रेन संख्या 09730/09729 बांद्रा टर्मिनस-दुर्गापुरा सुपरफास्ट स्पेशल [02 फेरे]

ट्रेन संख्या 09730 बांद्रा टर्मिनस-दुर्गापुरा सुपरफास्ट स्पेशल सोमवार, 17 नवंबर, 2025 को बांद्रा टर्मिनस से 10:00 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 05:30 बजे दुर्गापुरा पहुँचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09729 दुर्गापुरा-बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल रविवार, 16 नवंबर, 2025 को

दुर्गापुरा से 12:25 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 07:00 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुँचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, पालघर, वापी, वलसाड, नवसारी, सूरत, भरूच, वडोदरा, रतलाम, नागदा, भवानी मंडी, रामगंज मंडी, कोटा, सवाई माधोपुर और बनस्थली निवाई स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में फर्स्ट एसी, एसी-2 टियर, एसी-3 टियर, स्लीपर क्लास और जनरल सेकेंड क्लास कोच होंगे।

ट्रेन संख्या 09730 की बुकिंग 15 नवम्बर, 2025 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, संरचना और समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

फियो ने भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा व्यापार राहत उपायों - निर्यात प्राप्ति अवधि का विस्तार, अग्रिम भुगतान पर वस्तुओं को भेजने की अवधि में विस्तार; विशिष्ट प्रभावित क्षेत्रों पर ऋण चुकौती के बोझ को कम करना और निर्यात ऋण चुकौती में छूट - का स्वागत किया

नई दिल्ली : फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशन (फियो) ने भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा निर्यात प्राप्ति अवधि को नौ महीने से बढ़ाकर पंद्रह महीने करने और निर्यात पर अग्रिम भुगतान प्राप्त होने पर वस्तुओं को भेजने की अवधि को एक वर्ष से बढ़ाकर तीन वर्ष करने के निर्णय का स्वागत किया है।

भारतीय रिजर्व बैंक ने भुगतान स्थगन या स्थगन के माध्यम से विशिष्ट प्रभावित सेक्टरों पर ऋण चुकौती के बोझ को कम किया है और ऋणदाताओं को

कार्यशील पूंजी सुविधाओं में 'आहरण शक्ति' की पुनर्गणना करने की अनुमति भी प्रदान की है।

भारतीय रिजर्व बैंक ने निर्यात ऋण चुकौती अवधि में भी छूट दी है और ऋणदाताओं को 31 अगस्त, 2025 को या उससे पहले प्राप्त पैकिंग ऋण सुविधाओं को, जहाँ वस्तुओं को भेजना संभव नहीं था, किसी भी वैध वैकल्पिक स्रोत के माध्यम से समाप्त करने की अनुमति है।

फियो के अध्यक्ष श्री एस. सी. रल्हन ने कहा, "इस विस्तार से निर्यात व्यापार को बड़ी राहत मिलेगी। निर्यातक विदेशी खरीदारों को बेहतर ऋण अवधि प्रदान कर सकेंगे। इस व्यापार-समर्थक घटनाक्रम के कारण व्यापार संबंधी अनुपालन मज़बूत होगा। भारतीय निर्यातकों को अग्रिम भुगतान प्राप्त होने पर वस्तुओं की शिपमेंट के लिए पर्याप्त समय मिलेगा। सावधि ऋण और पैकिंग ऋण से संबंधित राहत उपायों से निर्यातक अपनी तरलता का उचित प्रबंधन कर सकेंगे।"

उन्होंने यह भी कहा कि यह विस्तार कई अन्य अर्थव्यवस्थाओं के अनुरूप हो सकता है, जिससे भारतीय निर्यातकों के लिए समान अवसर सुनिश्चित होंगे। फियो ने आश्वासन दिया कि वह भारतीय रिजर्व बैंक के साथ मिलकर काम करना जारी रखेगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि निर्यातक देश के बैंकिंग नियामक से उचित समर्थन के माध्यम से अपने निर्यात को बढ़ा सकें।

जगुदन स्टेशन पर इंजीनियरिंग कार्य हेतु ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी

पश्चिम रेलवे अहमदाबाद मण्डल के जगुदन स्टेशन यार्ड में 16.11.2025 (रविवार) को ब्रिज संख्या 982 के पुनर्निर्माण कार्य के संबंध में ब्लॉक लिया जा रहा है। जिसके कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी। जो निम्नानुसार है:-

आंशिक रद्द ट्रेनें:

1. दिनांक 16.11.2025 की ट्रेन संख्या 20959/20960 वलसाड-वडनगर-वलसाड एक्सप्रेस वडनगर और गांधीनगर कैपिटल के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।
2. दिनांक 16.11.2025 की ट्रेन संख्या 14821 जोधपुर-साबरमती एक्सप्रेस

साबरमती-आबूरोड के बीच तथा दिनांक 17.11.2025 की ट्रेन संख्या 14822 साबरमती-जोधपुर एक्सप्रेस आबूरोड-साबरमती के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

रिशेड्यूल ट्रेनें:

1. दिनांक 16.11.2025 की ट्रेन संख्या 20485 जोधपुर-साबरमती एक्सप्रेस जोधपुर से 2 घंटे रिशेड्यूल होगी।
2. दिनांक 16.11.2025 की ट्रेन संख्या 69207 गांधीनगर कैपिटल–वरेठा मेमू गांधीनगर कैपिटल से 01 घंटा रिशेड्यूल होगी।